15

''परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा''

यूहन्ना 3:16, एक निकट दृष्टि

> ''और जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊंचे पर चढ़ाया जाए। ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह अनन्त जीवन पाए।
>
> ''ज़्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा, कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए''[1] (यूहन्ना 3:14-17)।

हमें बाइबल की सबसे प्रसिद्ध ''सुनहरी'' आयत यूहन्ना 3:16 इन पदों में मिलती है: ''ज़्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए'' कम से कम दो कारणों से यह बाइबल की सबसे महान आयत है: (1) यह परमेश्वर की योजना के सज़्पूर्ण दायरे को बताती[2] है। सोलहवीं शताज़्दी के सुधारवादी अगुवे मार्टिन लूथर ने इसे ''बाइबल का लघु रूप'' कहा था। (2) इस आयत में अत्युज़म बातें हैं, जो मनुष्य को ज्ञात सबसे अद्‌भुत विषयों का सुझाव देते हुए सर्वोज़म शज़्द हैं।[3]

''ज़्योंकि *परमेश्वर ने*'': सबसे बड़ा जीव

जिस प्रकार संसार, मनुष्य, तथा सभी अच्छी वस्तुओं का आरज़्भ परमेश्वर से हुआ है, वैसे ही हमारी यह आयत आरज़्भ होती है, ''ज़्योंकि *परमेश्वर* ने जगत से ऐसा प्रेम रखा ...।''

इसमें सबसे बड़ा जीव मिलता है। हमारा दिमाग परमेश्वर से आगे नहीं सोच सकता। एक अमेरिकी राजनेता ने कहा था कि उसके दिमाग में आने वाला सबसे महत्वपूर्ण विचार परमेश्वर और उसके प्रति उसकी निजी ज़िज़्मेदारी है।[4]

परमेश्वर की बात करते हुए पौलुस ने लिखा कि वह ''सामर्थी है, कि हमारी विनती

और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है ...'' (इफिसियों 3:20)। अपनी सोच को खूब दौड़ाएं: आपको कोई ऐसी चीज नहीं मिलेगी, जो परमेश्वर न कर सकता हो।[5] परमेश्वर इतना महान है कि उसे पूरी तरह से समझने के लिए हमें उसके बराबर होना पड़ेगा, अर्थात हमें भी ईश्वरीय बनना आवश्यक है !

''जगत से'': सबसे बड़ा समूह

परमेश्वर ने यह सबसे बड़ा कार्य किसके लिए किया? ''ज़्योंकि परमेश्वर ने *जगत से* ऐसा प्रेम रखा कि उसने ... दे दिया ...'': जगत से-जो इतना बड़ा समूह है कि हमारी समझ से बहुत ऊपर है-संसार के सब लोग जो पहले हुए हैं, जो इस समय जीवित हैं और वे भी जो पृथ्वी के नष्ट होने से पहले तक जीवित होंगे। परन्तु हमारे दिमाग में वह सबसे बड़ा समूह ही नहीं, बल्कि पापी, आज्ञा न मानने वाला संसार है, जिसकी कल्पना हम कर सकते हैं, अन्धकार में डूबा हुआ संसार भी है।[6] परमेश्वर ने ऊपर से इस भज़्तिहीन संसार को देखा और इससे प्रेम किया। परमेश्वर ने *हमें* देखा और *हमसे* प्रेम किया।

अफ़्रीका में एक बार एक प्रचारकछोटे लड़कों के एक समूह से बातें कर रहा था। वह कहने लगा, ''मैं आपको उस सुसमाचार की बात बताता हूं, जिसका प्रचार हम अफ़्रीका में करते हैं। ज़्या यहां बैठे सभी *अच्छे* लड़के हाथ ऊपर उठाएंगे?'' कोई हाथ खड़ा न हुआ। उसने मुस्कुराते हुए कहा, ''तो फिर मेरे पास आपके लिए वही संदेश है, जो हम अफ़्रीका में दूसरे लोगों को देते हैं: परमेश्वर शरारती लड़कों से प्रेम करता है।''

शायद यह अच्छा न लगे, लेकिन है सच। ''परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा'' (रोमियों 5:8)।[7]

''ऐसा प्रेम रखा'': सबसे बड़ा गुण

सबसे बड़े जीव के लिए कहा जाता है, ''ज़्योंकि परमेश्वर ने जगत से *ऐसा प्रेम रखा।...*'' संसार में सबसे बड़ा गुण प्रेम ही है, ''पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थाई हैं, पर इन में से बड़ा प्रेम है'' (1 कुरिन्थियों 13:13)।[8] यह आयत बताती है कि इस सबसे बड़े गुण में परमेश्वर के पास सबसे बड़ा दर्जा[9] था: ''ज़्योंकि परमेश्वर ने जगत से *ऐसा* प्रेम रखा। ...''

इफिसियों 3:17-19 ऐलान करता है कि परमेश्वर के प्रेम के आयाम हैं: ''... कि तुम ... समझने की शज़्ति पाओ; कि उसकी *चौड़ाई,* और *लज़्बाई,* और *ऊंचाई,* और *गहराई* कितनी है। और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है। ...''

परमेश्वर के प्रेम की ''लज़्बाई'' कितनी है? वचन बताता है: ''परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ...।'' परमेश्वर का प्रेम हर बात में था![10]

''कि उसने अपना एकलौता पुत्र'': सबसे बड़ा दान

परमेश्वर ने *जो* दिया उससे उसने अपना सबसे अधिक प्रेम दिखा दिया है: ''परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने *अपना एकलौता पुत्र दे दिया,*'' जो संसार के लिए सबसे बड़ा दान है। लोग कई प्रकार के दान करते हैं। धनी लोगों द्वारा परोपकार के कार्यों के लिए बहुत बड़ी धनराशि देने का पता चलता है, कई बार तो वह राशि बहुत ही बड़ी होती है, परन्तु परमेश्वर के इस दान से किसी भी दान या उपहार की तुलना नहीं की जा सकती।

ध्यान दें कि परमेश्वर ने ज़्या दिया: (1) उसने अपना पुत्र दे दिया। एक स्नेही, आज्ञाकारी और कर्ज़व्यनिष्ठ पुत्र पर विचार करें। ऐसे पुत्र को त्याग देना कितना दिल दहलाने वाला होगा! (2) परमेश्वर ने केवल अपना पुत्र ही नहीं, बल्कि उसने अपना ''एकलौता''[11] पुत्र अर्थात अपनी समानता तथा अपने स्वरूप वाला पुत्र दे दिया, जिसके माथे पर ईश्वरीयता की मुहर थी। *एकलौता* पुत्र देने पर विचार करें। (3) परमेश्वर ने अपना एकलौता पुत्र ही नहीं दिया, बल्कि उसने *बलिदान* के लिए अपना एकलौते पुत्र दे दिया। यीशु ने उन लोगों के लिए दर्दनाक और लज्जाजनक मौत मरना था, जो इसके हकदार नहीं थे। परमेश्वर ने अपने पुत्र के आंसू बहते देख अपने दिल पर पत्थर बांधकर उसे दे देना था!

यह एक ऐसा बड़ा दान है, जो हमारी समझ से बिल्कुल बाहर है। पौलुस ने कहा है, ''परमेश्वर को उसके उस दान के लिए जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद हो'' (2 कुरिन्थियों 9:15)। संसार में कुछ ऐसी बातें हैं, जिन्हें हम समझ नहीं सकते, परन्तु हम उनके बारे में बात अवश्य कर सकते हैं–उदाहरण के लिए, संसार की जनसंज़्या या देश के ऋण की बात, परन्तु परमेश्वर का दान समझ से इतना परे है कि हम संक्षेप में इसके बारे में बोल भी नहीं सकते। ''देख प्यार ने कैसी मौत सही, देख कांटे सिर पर रहते हैं''![12]

''कि उसने ... दे *दिया*'': सबसे महान कार्य

सबसे बड़े जीव ने अपने में सबसे बड़ा गुण होने के कारण सबसे बड़े समूह के लिए ज़्या किया? ''परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा, कि उसने ... दे दिया। ...'' तीन कार्य देना, क्षमा करना तथा धन्यवाद, हमें परमेश्वर के निकट लाते हैं और इन सबका आधार *देना* ही है, जो सबसे महान कार्य है।[13]

''ताकि *जो कोई*'': सबसे बड़ा अवसर

परमेश्वर और मसीह की बात करने के बाद, पवित्र शास्त्र की इस आयत के अन्त में हम अपने ऊपर आते हैं:, ''ज़्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि *जो कोई* उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।'' ''जो कोई'' शज़्द संसार के सबसे बड़े अवसर की घोषणा करता है। परमेश्वर के प्रेम के प्रबंध सबके लिए हैं (लूका 2:10; मज़ी 28:19; प्रेरितों 10:34, 35;

17:30; 2 पतरस 3:9)। यीशु ने अपने चेलों से कहा था, ''तुम *सारे* जगत में जाकर *सारी* सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो'' (मरकुस 16:15)।

निजी लोगों के रूप में ''जो कोई'' हमारे लिए अर्थपूर्ण होना चाहिए। शायद उन्नीसवीं सदी के प्रचारक शायद ब्रुज़्स ने ही कहा था कि उसे यूहन्ना 3:16 को पढ़ना इस तरह अच्छा लगता है: परमेश्वर कह सकता था ''कि जो अमेरिकी उस पर विश्वास करें वे नाश न हों, परन्तु अनन्त जीवन पाएं''–लेकिन इसमें तो लैटिन अमेरिकी, दक्षिण अमेरिकी, उज़री अमेरिकी और दूसरे लोग भी आ जाते हैं। परमेश्वर ने कहा होगा ''कि ब्रुज़्स का परिवार अनन्त जीवन पाए'' लेकिन ब्रुज़्स नाम के तो और भी कई लोग होंगे। परमेश्वर ने कहा हो सकता है ''कि यदि फिलिप्प ब्रुज़्स विश्वास करे, तो वह उद्धार पाएगा''–लेकिन हो सकता है कि फिलिप ब्रुक नाम का कोई और आदमी भी हो; इसलिए फिर संदेह हो सकता था। फिलिप्प ब्रुज़्स का कहना था, ''मैं परेमश्वर का बहुत धन्यवाद करता हूं कि उसने 'जो कोई' कहा, ज़्योंकि मैं जानता हूं कि *ताकि* में मेरा नाम आ जाता है!'' हममें से हर कोई इस आयत को पढ़कर जान सकता है कि हमारा उद्धार हो *सकता* है!

परन्तु यह भी जान लें कि ''जो कोई'' शज़्द *हम* पर ज़िज़्मेदारी भी डालता है। इस शज़्द में ''जो कोई चाहता है'' और ''जो कोई नहीं चाहता'' का मिश्रण है। हम में से हर कोई इस अवसर का लाभ उठाने का या नहीं उठाने का निर्णय लेता है (प्रकाशितवाज़्य 22:17)। हम में से हर कोई अपने ही अनन्त भविष्य को तय करता/करती है।

''*उस पर*'': सबसे बड़ा आकर्षण

ऐसा विश्वास करने का परिणाम ज़्या होगा? हमें आज्ञा मानने के लिए कौन-सी बात प्रेरित करेगी? ''... ताकि जो कोई *उस* पर विश्वास करे, वह नाश न हो।'' यीशु उद्धार को सज़्भव बनाता है। वह युगों का सबसे बड़ा आकर्षण है। उसने कहा, ''और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खींचूंगा'' (यूहन्ना 12:32)। हमारा विश्वास किसी मनुष्य, किसी शिक्षा या किसी धार्मिक प्रबन्ध पर नहीं है। हमारा विश्वास केवल मसीह पर है, जो हमारे पापों के लिए मरा!

''*विश्वास करे*'': सबसे बड़ा आधार

इस सबसे बड़े अवसर का लाभ उठाने के लिए हमें ज़्या करना चाहिए? बाइबल कहती है, ''ताकि जो कोई उस पर *विश्वास करे,* वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।'' विश्वास सबसे बड़ा आधार है। मसीही बनने और मसीही लोगों के रूप में हम जो कुछ भी करते हैं, उसका आधार विश्वास ही है। ''और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, ज़्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है'' (इब्रानियों 11:6)।

यह ज़ोर दिया जाना चाहिए कि यूहन्ना 3:16 का ''विश्वास करे'' शज़्द केवल मन

में सहमति जताना नहीं है। द एज़्पलिफाइड बाइबल (1987 का संस्करण) में इस आयत का अनुवाद इस प्रकार है: ''ज़्योंकि परमेश्वर ने संसार से इतना प्रेम किया और इतना कीमती पुरस्कार दिया कि उसने अपना एकलौता (अर्थात केवल एक) पुत्र (तक) दे दिया, ताकि जो भी उसमें विश्वास करे (*भरोसा करे, निष्ठा रखे, निर्भर रहे*) वह नाश न हो, बल्कि अनन्त (अनन्त काल का) जीवन पाए।''

सच्चे विश्वास में परमेश्वर की इच्छा को मानना शामिल है, (देखें याकूब 2:20)। पौलुस ने लिखा है, ''और मसीह यीशु में न खतना, न खतनारहित कुछ काम का है, परन्तु केवल, जो प्रेम के द्वारा असर करता है'' (गलातियों 5:6)। विश्वास के आधार पर बनाए जाकर और प्रेम से प्रेरित होकर व्यज़्ति अपने पापों से मन फिराएगा (लूका 13:3), लोगों के सामने अपने विश्वास का अंगीकार करेगा (मज़्ी 10:32), और पापों की क्षमा के निमिज़् बपतिस्मे में गाड़ा जाएगा (प्रेरितों 2:38)।

''वह *नाश* न हो'': सबसे बड़ी त्रासदी

यदि हमारा यह विश्वास है, तो इसका परिणाम ज़्या होगा? ''... जो कोई उस पर विश्वास करे, वह *नाश* न हो...।'' हमारा आज्ञाकारी विश्वास उस सबसे बड़ी त्रासदी को रोक लेगा, जो मनुष्य पर पड़ सकती है।

इस जीवन में बहुत सी त्रासदियां आती हैं। खेत को आग लग जाती है, जिससे किसान की सारी फसल जल जाती है और वह कहता है, ''मैं बर्बाद हो गया।''[14] बाढ़ में कोई घर बह जाता है और परिवार की सारी सज़्पज़ि नष्ट हो जाती है, तो वे रोते हैं, ''हम तबाह हो गए।'' किसी बड़े परिवार में पति और पिता की मृत्यु हो जाती है तो परिवार टूटे हुए मन से चिल्लाता है, ''हम तो बर्बाद हो गए।'' किसी का स्वास्थ्य खराब हो जाता है, तो उसे भी यही लगता है कि ''मैं तो बर्बाद हो गया।'' मेरी बात सुनो, जीवन की ये त्रासदियां चाहे कितनी भी भयंकर ज़्यों न हों, परन्तु जब तक मनुष्य सदा के लिए नाश नहीं होता, तब तक वह कभी बर्बाद नहीं होता। *तब* ही उसे ''प्रभु के साज़्हने से और उसकी शज़्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड'' मिलेगा (2 थिस्सलुनीकियों 1:9; मज़्ी 25:46; प्रकाशितवाज़्य 20:10 भी देखें)। इस आयत में ''नाश'' शज़्द का अर्थ यही है!

''*परन्तु*'': सबसे बड़ा अन्तर

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि ''नाश'' बाइबल का अन्तिम शज़्द नहीं है। यह आगे भी बताती है, ''... ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, *परन्तु* अनन्त जीवन पाए।'' ''परन्तु'' एक छोटा-सा शज़्द है, जिससे संसार में सबसे बड़ा अन्तर आता है। इस आयत में, एक ओर तो हमें ''नाश'' शज़्द मिलता है, परन्तु इसी आयत में दूसरी ओर ''अनन्त जीवन है।'' दोनों में अन्तर करने वाला एक छोटा-सा विरोधसूचक संयोजक है ''परन्तु''!

''*अनन्त जीवन* पाए'': सबसे बड़ी प्रतिज्ञा

यह आयत इस प्रतिज्ञा के साथ खत्म होती है: ''... ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु *अनन्त जीवन* पाए।'' इसमें सबसे बड़ी प्रतिज्ञा मिलती है: परमेश्वर के साथ[15] वहां रहने की प्रतिज्ञा जहां ''वह उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं'' (प्रकाशितवाक्य 21:4)। यदि आप उस पर भरोसा रखते हैं और उसकी आज्ञा मानते हैं तो आपके साथ परमेश्वर की प्रतिज्ञा यही है!

सारांश

सुसमाचार की कहानी का एक ही आयत में यही सार है:

''*क्योंकि परमेश्वर ने*'': सबसे बड़ा जीव
''*जगत से*'': सबसे बड़ा समूह
''ऐसा प्रेम रखा'': सबसे बड़ा गुण
''*उसने अपना एकलौता पुत्र*'': *सबसे बड़ा दान*
''*कि उसने ... दे दिया*'': *सबसे बड़ा कार्य*
''ताकि *जो कोई*'': सबसे बड़ा अवसर
''*उस* पर'': सबसे बड़ा आकर्षण
''*विश्वास करे*'': सबसे बड़ा आधार
''*नाश* न हो'': सबसे बड़ी त्रासदी
''*परन्तु*'': सबसे बड़ा अन्तर
''*अनन्त जीवन* पाए'': सबसे बड़ी प्रतिज्ञा

हो सकता है कि आपको पूरी बाइबल समझ न आए, परन्तु क्या आपको यह आयत समझ आती है? यदि आपको यह आयत समझ आ गई है तो आपको चाहिए कि आप प्रभु के निमन्त्रण को स्वीकार कर लें। निश्चित तौर पर इस महान आयत की सच्चाइयों को बिना उसके स्पर्श से कोई नहीं समझ सकता। यदि आप सुसमाचार की सामर्थ से, परमेश्वर के प्रेम से प्रभावित हुए हैं, तो क्या आप इसका कुछ करेंगे नहीं?

टिप्पणियां

[1]यीशु का ''प्रथम आगमन'' एक उद्धारकर्ता के रूप में हुआ था, न्यायी के रूप में नहीं; परन्तु दूसरी बार वह हमारा न्याय करने वाला बनकर *आएगा* (प्रेरितों 17:31)। [2]इसमें परमेश्वर की सम्पूर्ण योजना नहीं आती जैसा कि कुछ लोगों का दावा होता है, परन्तु इसमें ईश्वरीय योजना के मूल तत्वों को ''शामिल'' अवश्य

किया गया है। [3]यूहन्ना 3:16 का यह सामान्य ढंग कई पुस्तकों में अपनाया गया है। यह मेरा संस्करण है। मैं नहीं जानता कि आरम्भ में यह विचार किसका था। [4]डैनियल वैबस्टर, फ्रैंक एस. मीड, संक. व सं. में उद्धृत, *12, 000 रिलिजियस कुटेशन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1989), 189. [5]ऐसी कोई बात नहीं है, जो परमेश्वर की *इच्छा के अनुरूप हो।* [6]संसार के पापपूर्ण होने को समझाने के लिए इस्तेमाल की जा सकने वाली आयतों में व्यवस्थाविवरण 9:2-4 हैं। [7]तीतुस 2:11; 1 तीमुथियुस 2:3, 4 भी देखें। [8]प्रेम पर अतिरिक्त आयतों के लिए, देखें 1 पतरस 4:8; इफिसियों 3:17. [9]कई लोग प्रवचन में इसे अलग प्वाइंट बनाते हैं। [10]परमेश्वर प्रेम *है* (1 यूहन्ना 4:7, 8)।

[11]यूनानी शब्द का अनुवाद ''एकलौता'' ''एकमात्र'' का सुझाव देता है। [12]आइजक वाटस के ''व्हेन आई सर्वे द वंडरस क्रॉस,'' (का हिन्दी अनुवाद-अनुवादक) *सौंग्स ऑफ़ फ़ेथ एण्ड प्रेज़,* संक. व सं. आल्टन एच. हॉवर्ड (वैस्ट मोनरो, लुइसियाना: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)। [13]देखें प्रेरितों 20:28. [14]इस और अगले वाक्य में यह मान लिया जाता है कि किसान और उसके परिवार के सामान का बीमा नहीं हुआ था। [15]देखें मरकुस 10:30; गलातियों 6:8; 1 तीमुथियुस 6:12; तीतुस 1:2.